डेकू दर्पण

डेकू की राजभाषा पत्रिका

अप्रैल 2022, अंक 5

विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेकू)
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अहमदाबाद

डेकू-इसरो द्वारा डिजाइन

इसरो अध्यक्ष श्री एस. सोमनाथ का दौरा 2022

पूर्व इसरो अध्यक्ष श्री शिवन कुमार का दौरा 2021

श्री राजेश खंडेलवाल निदेशक-डेकू
का कार्यभार ग्रहण करते हुए

निदेशक, डेकू विदाई समारोह
के दौरान संबोधित करते हुए

संपादकीय

इस वर्ष स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में पूरे देश में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाया जा रहा है। शासन में परतंत्रता की बेड़ियों से तो हम छूट गए हैं, लेकिन भाषायी स्वतंत्रता के लिए अभी बहुत प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। आज भी अपनी भाषा का प्रयोग करने में लोग संकोच करते हैं, वहीं अंग्रेजी सीखने के लिए लालायित रहते हैं और उसके प्रयोग में अधिक गौरव का अनुभव करते हैं। वाराणसी में 13-14 नवंबर को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृहमंत्री ने भी आह्वान किया कि स्वतंत्रता के 75 वर्ष हो जाने पर अपनी भाषाओं को उनका सम्मानीय स्थान मिलना चाहिए।

मातृभाषा में सीखने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि सीधे विषय को समझा जा सकता है। अन्य भाषा के माध्यम से पढ़ाई में पहले तो भाषा सीखने में श्रम करना पड़ता है। उसके बाद अगर समय और शक्ति बचे, तो विषय समझ में आता है। इसलिए आज देश के अधिकांश नागरिक अंग्रेजी में बोलने और लिखने में उतनी कुशलता का अनुभव नहीं करते हैं। अब यह बहुत जरूरी हो गया है कि हम अंग्रेजी माध्यम के स्थान पर मातृभाषा को शिक्षा, संपर्क, लेखन के माध्यम के रूप में अपनाने का प्रयास करें। अपनी भाषा हमें जितनी मजबूती से आगे बढ़ा सकती हैं, शायद विदेशी भाषा नहीं। भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता देकर हमें आने वाली पीढ़ी की नींव मजबूत करनी चाहिए। डेकू दर्पण राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में डेकू एक प्रयास है। हमें आशा है राजभाषा और भारतीय भाषाओं के प्रति हमारे सामूहिक प्रयास अधिक उत्साहजनक परिणाम प्राप्त करने में सार्थक सिद्ध होंगे।

डेकू दर्पण संपादक मंडल

संरक्षक - श्री राजेश खंडेलवाल, निदेशक - डेकू

श्री एस एल राजशेखर- अध्यक्ष
श्री ध्रुवित चणियारा- सदस्य
श्री धर्मेन्द्र एस तोमर- सदस्य
डॉ. नारायण मोहंती- सदस्य
डॉ. दीप चंद्र- सदस्य

डॉ. देवदास एम बी- सदस्य
श्रीमती नीलू सेठ/ श्री सोनू जैन, सैक- सदस्य
श्रीमती पल्लवी श्रीधर- सदस्य
कु. जोनी आर लईवोन- सदस्य-सचिव

सहयोग
श्री पुनित सिंघवी
आलेखी अभिकलन
श्री रमेश ए
श्री अरविंद मिश्र

राजेश खंडेलवाल
निदेशक/ अध्यक्ष-राभाकास
विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट

संदेश

भाषा ज्ञान की संवाहक होती है, मैंने महसूस किया है कि वैज्ञानिक और तकनीकी प्रकृति के ज्ञान के संवहन में जहाँ कहीं भी राजभाषा का प्रयोग होता है, उसका उद्‌भव अति सुंदर होता है। आम तौर पर तकनीकी कार्यों को राजभाषा में करना थोड़ा कठिन माना जाता है, परंतु अंतरिक्ष विभाग के विभिन्न केंद्र/यूनिट, प्रशासनिक ही नहीं अपितु तकनीकी क्षेत्र के कार्यों में भी राजभाषा का प्रयोग पूरी निष्ठा एवं उत्साह से कर रहे हैं। डेकू के कर्मचारी केंद्र में आयोजित अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन में अपना योगदान देते हैं। इसी योगदान की बदौलत विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट अहमदाबाद नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से अनेक बार पुरस्कृत होता रहा है।

इसी दिशा में गत वर्ष डेकू में राजभषा हिंदी के प्रगामी प्रयोगों को अधिक उपयोगी, नवाचारपूर्ण एवं परिणामलक्षी बनाने के लिए मैंने “राजभाषा कार्यान्वयन मित्रदल” एवं “न्यूज़लेटर प्रकाशन समिति” का गठन किया था। फलस्वरूप, डेकू की गृह पत्रिका “डेकू दर्पण” के इस पाँचवें अंक हेतु प्राप्त रचनाओं का स्तर देखकर मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। डेकू दर्पण के माध्यम से हम संघ की राजभाषा नीति के पालन में तो अपना योगदान देते ही हैं, साथ ही साथ डेकू के कर्मचारियों की सृजनशीलता को भी एक मंच मिलता है। इस प्रकार की सृजनात्मकता से मुख्य धारा के कार्य करने के लिए भी ऊर्जा प्राप्त होती है।

भारत सरकार और अंतरिक्ष विभाग के निर्देशानुसार 'आजादी के अमृत महोत्सव' के अंतर्गत हमने अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया । साथ ही हिंदी वृत्तचित्रों का निर्माण और संपादन किया । विक्रम साराभाई हिंदी मौलिक पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत डेकू की ओर से "अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आधारित सामाजिक अनुप्रयोगों की यात्रा" शीर्षक पर हिंदी पुस्तक का लेखन एवं संपादन कार्य हेतु आवश्यक मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन भी दिया ।

मुझे आशा है कि पिछले अंकों की तरह इस अंक को भी पाठकों से अच्छा प्रतिभाव प्राप्त होगा। इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

(राजेश खंडेलवाल)

अनुक्रमणिका

रंग – एक भाषा.....01

क्या है कहानी?.....04

सामाजिक अनुसंधान की आवश्यकता.....05

सफर हिंदी फिल्मों का.....07

3डी प्रोडक्शन पाइपलाइन – एक परिचय.....08

जूनागढ़ धार्मिक और ऐतिहासिक धरोहर.....12

प्रेरक वाक्य.....15

डेकू में वर्ष 2021 के दौरान राजभाषा गतिविधियाँ.....16

डेकू द्वारा संपादित हिंदी वीडियो कार्यक्रम.....21

अन्य गतिविधियाँ.....25

कला प्रदर्शनी.....15, 22, 27, 35

आवरण पृष्ठ

डेकू-इसरो, अहमदाबाद के द्वारा चार दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन

छायांकन - संतोष अंकुश गव्हाणे

कनिष्ठ निर्माता

रंग-एक भाषा

यदि भाषा का अर्थ अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाना तथा उसे संजोकर रखना है, तो कला ही मानव प्रजाति की सर्व प्रथम भाषा रही है। अपने अनुभव को दर्ज करने के लिए मानव प्रजाति ने बहुत ही आरम्भ यानी जब से अपने हाथ का उपयोग करना शुरु किया है, तब से हम प्राकृतिक रंगद्रव्य, धूल मिट्टी तथा कृत्रिम रंगों का उपयोग कर रहे हैं।

रंग गैर-मौखिक संचार का सबसे तात्कालिक रूप रहा है। हमारे पूर्वजों ने हमें रंगों के प्रति अवगत कराया क्योंकि उनका अस्तित्व इस पर निर्भर करता था कि वो क्या उपभोग करें और क्या न करें। इस कारण से हम रंग के प्रति एक निश्चित समझ के साथ विकसित हुए है और स्वाभाविक रूप से रंग के प्रति अपनी प्रतिक्रिया करते हैं। रंग तत्काल ध्यान खींचने वाले के रूप में कार्य कर सकता है, चाहे वह प्रिंट में, स्क्रीन पर या सुपरमार्केट शेल्फ पर हो, रंग का उपयोग विचारों और भावनाओं को इस तरह से प्रस्तुत करने के लिए किया जा सकता है जो कि डिजाइन का अन्य कोई तत्व नहीं कर पाता है। समकालीन डिजाइन में रंग का महत्व सर्वोपरि है। स्वभावतः हम सभी की रंगों के मामले में अपनी अपनी प्राथमिकता होती है और यह उन सभी सांस्कृतिक मानदंडों और रंगों के उपयोग की समझ के अधीन हैं जो हमारे चारों ओर उपस्थित हैं।

1. बुनियादी शब्दावली

रंग का सिद्धांत विभिन्न प्रकार के रंगों की परिभाषा एवं उनके अलग अलग रूप में मिश्रित कर के उपयोग करने के तरीके से शुरु होता है। छविकार के लिए कई रंग सिद्धांत उपलब्ध हैं, जिनमें से सबसे लोकप्रिय मुन्सेल्ल, ओस्त्वाल्ड और प्रांग प्रणालियाँ हैं, प्रांग प्रणाली आधुनिक समय में सबसे ज्यादा प्रचलित रहा है जिसमे हम मुख्यतः प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक रंगों के बारे में समझते हैं।

1.1. प्राथमिक रंग

प्राथमिक रंग को शुद्ध रंग माना जाता है, ये एकमात्र रंग हैं जिन्हें अन्य रंगों को मिलाकर नहीं बनाया जा सकता। ये दो प्रकार के होते हैं- योगात्मक और ऋणात्मक, योगात्मक में प्राथमिक रंग लाल, हरा और नीला (RGB) होता है जो मिलकर सफ़ेद रंग का निर्माण करते हैं, वहीं ऋणात्मक में प्राथमिक रंग लाल, पीला और नीला (RYB) होता है जो मिलकर काले रंग का निर्माण करते हैं, योगात्मक ज्यादातार डिजिटल स्क्रीन पर उपयोग किया जाता है वहीं ऋणात्मक प्राकृतिक रूप में उपयोग किया जाता है।

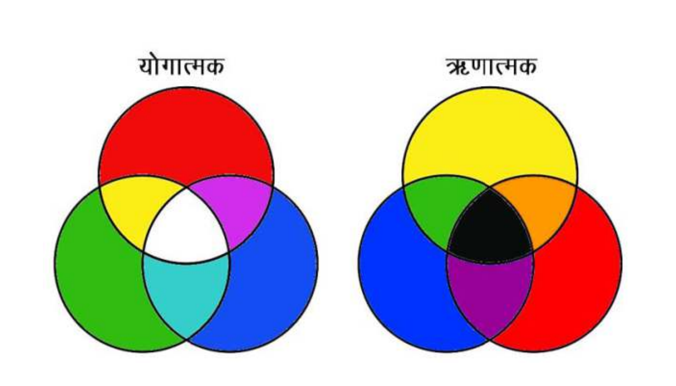

1.2. द्वितीयक रंग

समान अनुपात में किसी भी दो प्राथमिक रंगों के मिश्रण से द्वितीयक रंग उत्पादित होता है, यह योगात्मक व्यवस्था में आश्याम (cyan), गहरा गुलाबी और पीला तथा ऋणात्मक व्यवस्था में नारंगी, हरा और बैंगनी रंग का निर्माण करता है।

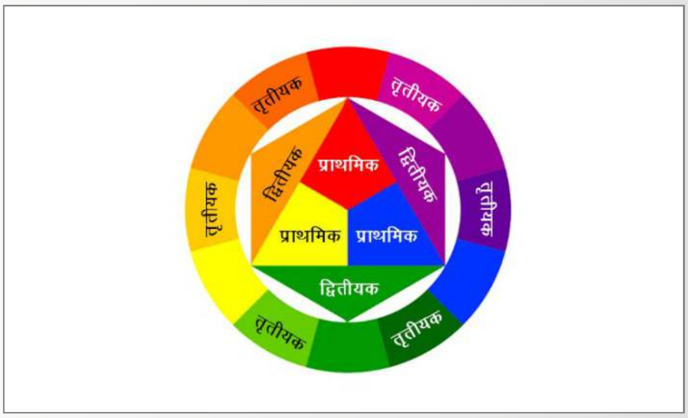

1.3. तृतीयक रंग

एक प्राथमिक रंग और एक द्वितीयक रंग के बराबर भागों को मिलाने से तृतीयक रंग का निर्माण होता है।

2. रंगों के प्रतीक

रंग में प्रतीकात्मक अर्थों का भंडार होता है जो हमें अपने समाज और संस्कृति से प्राप्त होते हैं, इसलिए रंगों का चयन सांस्कृतिक मानदंडों और लक्षित दर्शकों के संघो (associations) को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए, खासकर जब डिजाइन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करना हो क्योंकि अलग-अलग देश में रहने वाले लोगों के

अलग-अलग सांस्कृतिक मूल्य होते हैं, एक ही रंग के प्रति अलग संस्कृति के लोगों की प्रतिक्रिया भिन्न हो सकती है। दुनिया भर के लोगों के लिए रंगों का बहुत महत्व है, रंग न केवल भावनाओं को प्रभावित करते हैं बल्कि वे धर्म और विभिन्न संस्कृतियों में भी अपना अर्थ रखते हैं।

2.1. लाल:
लाल रंग सभी रंगों में सबसे अधिक जीवंत होता है, यह अधिवृक्कग्रंथि और न्यूरोंस को उत्तेजित करता है। यह स्फूर्तिदायक रंग है इसलिए व्यायाम के दौरान पहनने के लिए उत्तम माना जाता है। लाल रंग प्यार का भी प्रतीक है, यह दिल की धड़कन और सांस लेने की प्रक्रिया को उत्तेजित करता है। हालाँकि,लाल रंग के अत्यधिक संपर्क से तनाव या क्रोध भी आ सकता है। कला में लाल रंग का उपयोग शक्ति, हिंसा, उत्साह, आक्रमण इत्यादि से सम्बंधित विषय को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

2.2. पीला:
पीला रंग मस्तिष्क में सेरोटोनिन नामक एक रसायन को उत्पन्न करने में मदद करता है जो किसी के हर्षित होने के लिए आवश्यक है, इसीलिए पीले रंग को खुशी का रंग भी कहा जाता है परन्तु बहुत अधिक पीला थकान का कारण भी बनता है; यह चयापचय क्रिया को तेज करने में भी लाभकारी है और एक सामान्य खाद्य रंग भी है। कला में पीले रंग का उपयोग सावधानी, उल्लास,आशावाद, कायरता इत्यादि से सम्बंधित विषय को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

2.3. नीला:
नीला रंग मस्तिष्क में मन को शांत करने वाले कुछ रसायनों को उत्पन्न करने में मदद करता है। कॉर्पोरेट क्षेत्र में नीले रंग का बहुत उपयोग किया जाता है क्योंकि यह रंग वफादारी और रचनात्मकता को दर्शाता है। कला में नीला रंग विश्वास, स्वच्छता , निष्ठा , धीरज इत्यादि को प्रदर्शित करता है।

2.4. काला:
काला रंग ज्ञान और बुद्धि का का प्रतीक है तथा यह शक्ति और अधिकार को भी प्रदर्शित करता है, फैशन उद्योग में काला रंग बहुत लोकप्रिय है क्योंकि इसका स्टाइल से जुड़ाव है और यह लोगों को पतला दिखाता है। कला में मृत्यु, शोक, रहस्य,रम्यता इत्यादि को प्रदर्शित करने के लिए काला रंग उपयोग में लाया जाता है ।

2.5. सफेद:
सफेद रंग को सबसे तटस्थ माना जाता है, यह भोलापन और स्वच्छता का प्रतीक है। कला में सफ़ेद रंग पवित्रता तथा शांतिपूर्णता की भावना को प्रदर्शित करता है ।

2.6. हरा:
हरा रंग प्रकृति का सम्मान करता है, शरीर को आराम देता है और दृष्टि में सुधार करता है। कला में हरे रंग का प्रयोग लालच, समृद्धि ,प्रकृति, सुखदायक इत्यादि को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

2.7. नारंगी:
यह लाल और पीले रंग के मिश्रण से तैयार होता है इसलिए इसमें दोनों रंगों का संयोजित प्रभाव होता है, यह मानसिक क्षमताओं को उत्तेजित करता है। स्वास्थ्य, ऊर्जा, सौहार्द, अग्नि , उत्साह इत्यादि को प्रदर्शित करने के लिए नारंगी रंग उपयोग में लाया जाता है।

2.8. बैंगनी:
बैंगनी रंग शाही, विलासिता और परिष्कार का प्रतीक है,यह आध्यात्मिकता और गहरे विचारों को विकसित करता है।

3. रंग के द्योतक (REPRESENTATIVE) उपयोग

रंगों का उपयोग विभिन्न अर्थों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए कई तरह से किया जाता है। बहुत सरल तरीकों से उपयोग किये जाने पर रंग एक शक्तिशाली प्रभाव प्रदान कर सकता है।

3.1. भावनाएं:
नीले रंग को रूढ़िवादी के रुप में देखा जाता है, लाल रंग शक्ति और आक्रमकता को प्रदर्शित करता है, पीले और नारंगी जैसे चमकीले रंग भावनावों की गर्माहट के साथ-साथ तापमान का प्रतिनिधित्व करते हैं, शांति का प्रभाव दिखाने के लिए नीले, हरे, काले अथवा किसी भी गहरे रंग का प्रयोग किया जाता है। उदासीनता को नीला, क्रोध को लाल और डर को पीले रंग से प्रदर्शित किया जाता है।

3.2. पारिस्थितिकी:
स्पष्टतः हरा रंग पारिस्थितिकी का प्रतीक है। जो व्यक्ति या संस्था बिजली, ईंधन या पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली चीजों में कटौती करने के तरीके पर काम करते हैं उनके लिए नया वाक्यांश उपयोग में लाया जाता है “हरित होना(Go Green)"।

3.3. वाक्यांश:
जब किसी चीज को चरम या दृढ़ स्थिति में देखा जाता है तो उसे "सफ़ेद या काला" कहा जाता है और जब कुछ स्पष्ट न हो तो उसे "धुसरा (gray) " कहा जाता है।

3.4. भाषा में रंग:
हमारी भाषा में रंगों के कई उपयोग होते रहते हैं जैसे: सफ़ेद झूठ, हरी बत्ती, रंगे हाथों पकड़ना, ब्लैकआउट, पीला पेट, इत्यादि। हालाँकि वाक्यांश के अलग-अलग तत्वों से कोई सही अर्थ नहीं समझा जा सकता क्योंकि अभिव्यक्ति में रंग अक्सर इक्षित अर्थ का संकेत देता है। प्रत्येक रंग के साथ हमने जो अलग-अलग जुड़ाव बनाये हैं, वो हमारी बोलचाल की भाषा में सम्मिलित हो गए हैं, इसलिए उनका उपयोग अक्सर उस भावना या मनोदशा को सुदृढ़ करने के लिए किया जाता है।

3.5. धर्म में रंग:
रंग धर्मों के पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है इसलिए इनका उपयोग लगभग सभी धर्मों के धार्मिक समारोहों में किया जाता रहा है। बौद्ध धर्म में नीला आकाशीय बुद्ध वैरोचन का रंग है। बौद्ध भिक्षु परम्परागत केसरिया रंग के वस्त्र को धारण करते हैं। हिंदू धर्म में केसरिया रंग को सबसे पवित्र मन जाता है, यह रंग अग्नि का प्रतिनिधित्व करता है जो हमारी अशुद्धियों को जलाती है। हिंदू धर्म में नीला रंग अनन्तता और विशालता को प्रदर्शित करता है। इस्लाम धर्म में हरे रंग को जन्नत से जोड़ा गया है। ईसाई धर्म में लाल रंग यीशु के रक्त और बलिदान का प्रतीक माना जाता है।

संभवतः रंग ही पहला तत्व है जिसे हम पहली बार देखते ही उसे पंजीकृत (register) कर लेते हैं। हमारे सांस्कृतिक विकास और सुधार के कारण हमने अलग-अलग रंगों के अपने-अपने अर्थ बना लिए हैं जो किसी वस्तु या डिजाइन पर हमारी प्रतिक्रिया को निश्चित करता है। रंगों के अर्थ हमारी सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ हमारी प्रवृतियों, उम्र तथा व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर भी निर्भर करती है।

अरविन्द कुमार मिश्र
वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

क्या है कहानी?

नयी कहानी, पुरानी कहानी
लिखी हुई कहानी, सुनी हुई कहानी
पढ़ी हुई कहानी, देखी हुई कहानी
इधर की कहानी, उधर की कहानी
उसकी कहानी, इसकी कहानी
सब की कहानी, हमारी कहानी
दिन की कहानी, रात की कहानी
राजा की कहानी, रानी की कहानी
दादा-दादी की कहानी, नाना-नानी की कहानी
फ़िल्मी कहानी, नाटक की कहानी
कभी तेरी कहानी, कभी मेरी कहानी
सर्दी की कहानी, गर्मी की कहानी
पढ़ाई की कहानी, जिंदगी की कहानी
घर की कहानी, ऑफिस की कहानी
प्यार की कहानी, जंग की कहानी
डर की कहानी, साहस की कहानी
रोचक कहानी, रहस्य की कहानी
सच्ची कहानी, झूठी कहानी
तरह-तरह की कहानी, हर तरह की कहानी
जीवन एक कहानी, मरण एक कहानी
मेरा जीवन एक कहानी, सबका जीवन एक कहानी
ना जाने कितनी है कहानी, हर तरफ है कहानी!

वरेन्द्र वर्मा
कनिष्ठ निर्माता

सामाजिक अनुसंधान की आवश्यकता

इंसान स्वाभावगत जिज्ञासु प्रवृत्ति का है। आस-पास की घटनाओं को जानने और समझने की उसकी इच्छा हमेशा से रही है। इन घटनाओं के बारे में जानने के लिए उसके मन में कई प्रकार के सवाल उठते हैं। इहीं प्रश्नों के जवाबों को जानने के लिए व्यक्ति नये विचारों का निर्माण करता है। और इन विचारों को निरूपित करता है। साथ घटनाओं के बारे में सामन्यीकृत निर्णय पर पहुँचता है जो उसकी सोच, समझ और बुद्धिशीलता में वृद्धि करती है। इस प्रकार के ज्ञान को अर्जित करने के लिए अपने संवेदी अंगों, अनुभवों, परीक्षणों और तर्कों का सहारा भी लेता हैं। आज ज्ञान अर्जित करने में अनुसंधान का प्रयोग किया जाता है, जिसमें वैज्ञानिक विधियों, प्रक्रियाओं और तर्कों का प्रयोग किया जाता है। अनुसंधान द्वारा ही नये सिद्धान्तों का जन्म भी होता है और पहले से स्थापित सिद्धान्तों का परीक्षण भी होता है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है और समाज के बिना उसे अपना जीवन गुजारना मुश्किल है। इस समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है। इसी समाज में उसके सभी सामाजिक क्रियाकलाप होते हैं, जो उसके जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। इसके साथ ही कई प्रकार की सामाजिक घटनाएं घटित होती हैं। इन घटनाओं के कारण समाज में कई तरह के विक्षोभ उत्पन्न होते हैं। कई बार ये समाज के विखंडन का कारण भी बनते हैं। सामाजिक अनुसंधान मुख्यतः समाज में घटित होने वाली घटनाओं और मानव के व्यवहार का एक अध्ययन है।

कई सामाजिक विज्ञानियों ने इसकी परिभाषा निम्ननुसार दी है।

पी वी यंग के अनुसारः-सामाजिक तथ्य परस्पर संबंधित प्रक्रियाओं की विधिवत खोज और विश्लेषण सामाजिक अनुसंधान है।

जीएम फिशर के अनुसारः-किसी समस्या को हल करने अथवा एक परिकल्पना की परीक्षा करने अथवा नई घटना या नये संबंधों को खोजने के उद्देश्य से सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त कार्य-विधि का प्रयोग करना ही सामाजिक अनुसंधान है।

सामाजिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सामाजिक घटनाओं और सामाजिक समस्याओं के कारण इनके अन्तःसम्बन्धों का ज्ञान, उनमें निहित प्रक्रियाओं का अध्ययन, विश्लेषण और तदनुसार परिणामों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि अनुसंधान नये ज्ञान की प्राप्ति तथा उपलब्ध ज्ञान की व्याख्या करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें तथ्यों का अवलोकन, वर्गीकरण, साधारणीकरण तथा सत्यापन के चरण क्रम में होते हैं। अनुसंधान एक ऐसा प्रयत्न है जिसमें नवीन ज्ञान की खोज तथा उपलब्ध ज्ञान में परिवर्तन भी मालूम करना होता है।

सामाजिक अनुसंधान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके कई चरण होते हैं। इस प्रक्रिया को चित्र संख्या 1 में दर्शाया गया है। प्रमुख तौर पर प्रयोग किये जाने वाले चरणों को इसमें

चित्र 1: सामाजिक अनुसंधान के प्रमुख चरण

दर्शाया गया है, लेकिन ये चरण मुख्य रूप से अध्ययन की आवश्यकतानुसार ही तय किये जाते हैं।

देश के अकादमिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों एवं सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा समाज और देश में व्याप्त समस्याओं और घटित होने वाली सामाजिक घटनाओं को समझने और उनके हल के लिए निरंतर सामाजिक अनुसंधान किया जा रहा है। सरकार द्वारा चलाई जा रही कई जनकल्याण परियोजनाओं से आम लोगों को कितना लाभ, उपयोगिता, प्रभाव और क्या-क्या समस्यायें आ रही है। इन सबको निष्पक्ष रूप से समझने के लिए सामाजिक अनुसंधान नितांत आवश्यक है।

इसरो/ डेकू के द्वारा सामाजिक अनुप्रयोग के माध्यम से चलाई जा रही विकास संचार परियोजनाओं से सम्बन्धित सामाजिक अनुसंधान का कार्य सामाजिक अनुसंधान एवं मूल्यांकन प्रभाग द्वारा अनवरत किया जा रहा है। पूर्ववर्ती विकास संचार परियोजनाओं जैसे खेड़ा संचार परियोजना, झाबुआ परियोजना, टीडीसीसी, विलेज रिसोर्स सेंटर पर कई प्रकार के अध्ययन किये गए हैं। वर्तमान में दूर-शिक्षा, दूर-चिकित्सा, मोस्डैक, एनईडीआरपी, जियो मनरेगा, नाविक, सोलर ऐप, आउटरीच कार्यक्रम इत्यादि की आवश्यकता, मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि से सम्बन्धित अध्ययन किये जाते हैं।

सामाजिक अनुसंधान को कई बार कमतर आंका जाता है। लेकिन यह समाज और विश्व के लिए सबसे जरूरी अध्ययनों में से एक है। देश के सामाजिक कल्याण के लिए बहुत सी परियोजनाओं और योजनाओं को सरकार द्वारा संचालित किया जाता है। इन परियोजनाओं की प्रतिपुष्टि, प्रभाव, उपयोगिता इत्यादि जानने के लिए सामाजिक अनुसंधान ही एकमात्र उपाय है।

डॉ दीप चन्द्र
सामाजिक अनुसंधान अधिकारी सी

सफर हिंदी फिल्मों का

नहीं पुराना, है ये हमारा, सौ वर्षों का हिन्दी फिल्मों का खजाना
मूक फिल्मों से जो उठा था पर्दा, गिरा नहीं बस बड़ा-चढ़ा है।

बोलती फिल्मों ने किया अचंभित, तो श्याम-श्वेत (B/W) से रंगीन (Colour) ने किया आकर्षित।

हास्य, मनोरंजन और सच को परोसता, साथ ही सामाजिक बुराइयों को कोसता।

सात सुरों से सुसज्जित हिन्दी फ़िल्म संगीत, जिसे गुनगुना रहा है, युवा, अमीर या हो गरीब,
फिजाओ में घूमता इसका सरगमी सुर, तो दिल की गहराई में बसता इसका रूप।

फिल्मकारों की मेहनत तब रंग लाती, जब फिल्मे गोल्डन जुबली मनाती,
लाइट, कैमरा, एक्शन का इसमें है कमाल, जब फिल्मे करती पर बॉक्स ऑफिस में धमाल।

हिन्दी फिल्मों से इनको मिला है मान, चाहे हो कपूर या हो खान,
रोशन हुए इससे और भी कई नाम, जिन्होने किये फिल्मों में अच्छे काम।

हिन्दी फिल्मों का है ये प्रभाव, विश्व मंच पर नहीं है पहचान का अभाव,
समय के साथ सिनेमा का बदला रूप, फिल्मों की पट्टी ने लिया डिजिटल स्वरुप।

हिन्दी फिल्मों से हमें और भी है आशा, यह बनाये हिन्दी को जन-जन की भाषा,
सौ साल का हुआ सिनेमा पर लगता हें मानो नया-नया, क्योकि
पिक्चर अभी और भी आनी है मेरे दोस्त,
पिक्चर अभी और भी आनी है मेरे दोस्त।

धर्मेन्द्र सिंह तोमर
वैज्ञानिक/अभियंता एसडी

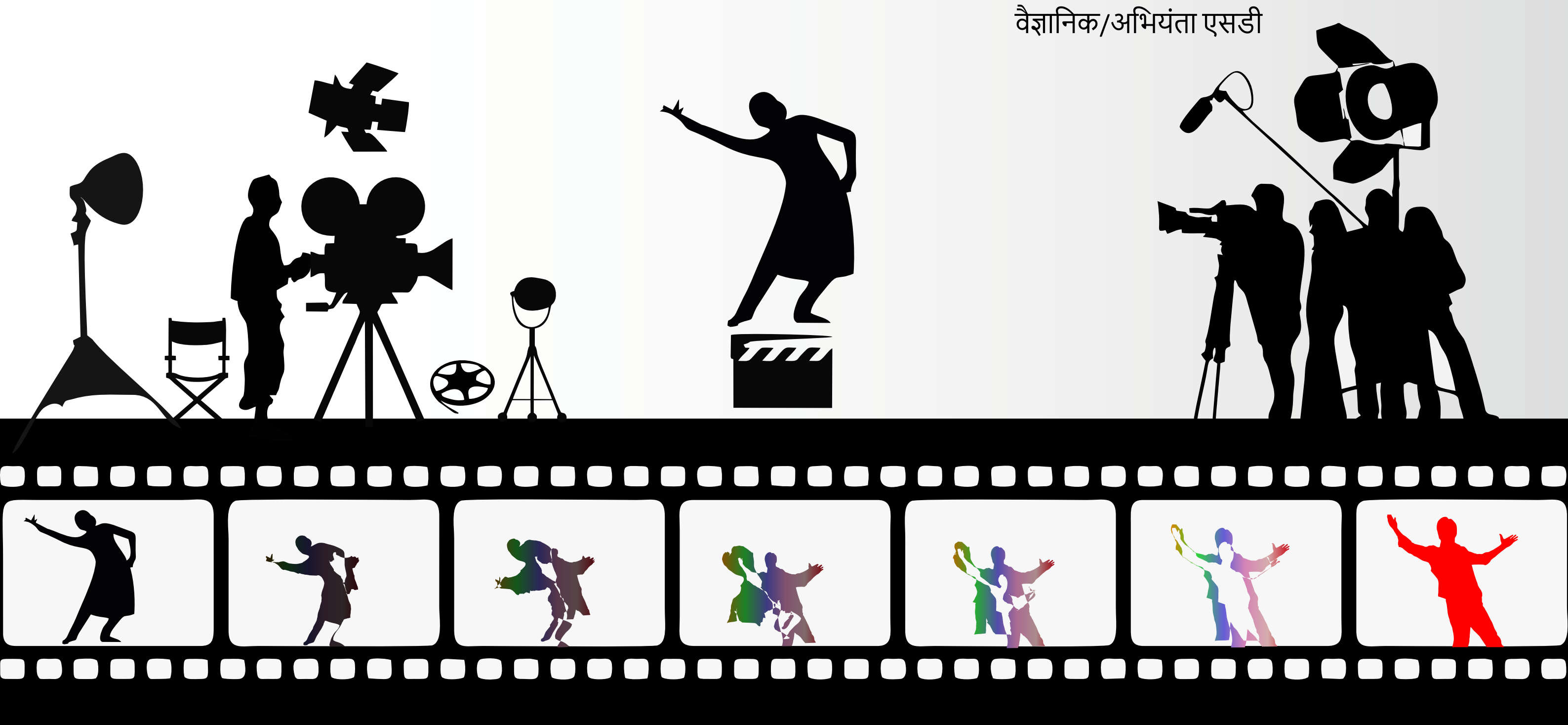

3डी प्रोडक्शन पाइपलाइन - एक परिचय

प्रोडक्शन पाइपलाइन, प्रक्रियाओं का एक समूह है जिसका उपयोग किसी विचार को तैयार उत्पाद में बदलने के लिए किया जाता है। 3डी के संदर्भ में, एक प्रोडक्शन पाइपलाइन को तीन विभिन्न चरणों में विभाजित किया जाता है, जिसमें प्री-प्रोडक्शन, प्रोडक्शन और पोस्ट-प्रोडक्शन शामिल हैं। प्रत्येक चरण के भीतर सटीक प्रक्रियाएं परियोजना के प्रकार और स्टूडियो के आधार पर भिन्न हो सकती हैं।

2डी में सिर्फ दो आयामी दिशा, ऊंचाई/लम्बाई (x) और चौड़ाई (y) होती है, जबकि 3डी में तीन आयामी दिशा, ऊंचाई/लम्बाई (x) और चौड़ाई (y) के साथ-साथ गहराई (z) भी होती है। 2डी और 3डी में अंतर पता करने के लिए इसका मुख्य उदाहरण, 2डी में टॉम एंड जेरी, छोटा भीम इत्यादि हैं, और 3डी में टॉय स्टोरी, फाइंडिंग निमो इत्यादि हैं।

यह लेख 3डी प्रोडक्शन पाइपलाइन के विशेष तत्वों पर प्रकाश डालेगा।

प्री-प्रोडक्शन

प्री-प्रोडक्शन वह चरण है जहां एक विचार, अन्वेषण (exploration), रुपरेखा और खोज की प्रक्रिया से गुजरता है। यह पाइपलाइन का वह बिंदु है जहां परिकल्पना की जगह पात्र, शैली, आदर्श, कहानी सभी स्थापित किए जाते हैं।

कला की दिशा और परियोजना की समग्र दृष्टि को औपचारिक रूप से परिभाषित करने के लिए इस चरण के दौरान प्री-प्रोडक्शन की प्रक्रियाएं जैसे विचार, परिकल्पिक कला (कांसेप्ट आर्ट), डिज़ाइन ब्रीफ, स्टोरीबोर्ड, एनिमेटिक्स, ध्वनि इत्यादि शामिल हैं।

· **विचार**
हर महान कहानी एक शानदार विचार से शुरू होती है। इस प्रकार, एक सफल एनीमेशन के लिए एक ठोस, सुविचारित विचार होना आवश्यक है।

· **कहानी रचना**
पूरी कहानी को आकार देने तथा विचारों का विकास और सुधार करने का कार्य किया जाता है। यह एनीमेशन में क्या होने जा रहा है, इसका एक मूल संस्करण है, जिसमें वर्ण, संघर्ष, आदि शामिल हैं।

· **पटकथा लेखन**
कहानी का औपचारिक, लिखित, साहित्यिक संस्करण किया जाता है। यहाँ चरित्र संचालन, पर्यावरण, समय, कार्यों और संवादों को तैयार किया जाता है।

· **स्टोरीबोर्डिंग**
स्टोरीबोर्ड स्क्रिप्ट का एक नॉन-मूविंग विज़ुअल संस्करण है। यह मूल रूप से एक कॉमिक बुक की तरह दिखता है, जिसमें कैमरा स्टेजिंग, प्रमुख चरित्र पोज़ या दृश्य घटनाओं के शुरुआती विचार शामिल होते हैं।

· **एनिमेटिक**
स्टोरीबोर्ड के एक गतिशील रूप को एनिमेटिक कहा जाता है जो पूरे प्रोजेक्ट के अंतिम संपादन में विकसित होता है। एनिमेटिक स्टोरीबोर्ड के माध्यम से परियोजना के अनुक्रम समय को चित्रित करते हुए अपने सबसे सरल रूप में बनाया गया है।

प्रोडक्शन

प्रोडक्शन, पाइपलाइन का वह चरण है, जिसमें प्री-प्रोडक्शन के दौरान किए गए सारे विचार, अन्वेषण, रुपरेखा इत्यादि को क्रिया में बदला जाता है। इस स्तर पर, 3डी एनिमेशन के दृश्य तत्वों को नामित टीमों और कलाकारों को सौंप दिया जाता है। टीमलीड यह सुनिश्चित करते हैं कि समय सीमा और गुणवत्ता प्री-प्रोडक्शन चरण में निर्धारित योजना से मेल खाती है और यथासंभव सुचारू रूप से चलती है। इस चरण का परिणाम संपूर्ण 3डी एनिमेशन को आकार देता है।

प्रोडक्शन चरण में निम्नलिखित प्रक्रियाएं होती हैं-

· **3डी मॉडलिंग**
3डी मॉडलिंग, प्रोडक्शन पाइपलाइन में वह चरण है जहाँ दृश्य, 3डी ऑब्जेक्ट (या मॉडल) बनाए जाते हैं, जो उस कला पर आधारित होता है जिसे प्री-प्रोडक्शन चरण के दौरान कांसेप्ट में बनाया गया था। यह सुनिश्चित किया

जाता हैं कि यहाँ, प्री-प्रोडक्शन के दौरान स्थापित कला निर्देश का पालन हो रहा है। इनमें से कुछ चीजों में किरदार, रंगमंच सामग्री और परिवेश (enviroment) शामिल हो सकते हैं। यह मॉडल कई अलग-अलग 3डी सॉफ़्टवेयर पैकेज जैसे, ब्लेंडर, औटोड़ेस्क माया या 3डी स्टूडियो मैक्स का उपयोग करके बनाए जा सकते हैं। सभी 3डी सॉफ़्टवेयर कुछ सामान्य परिक्रिया और उपकरण को साझा करते हैं, जो सभी 3डी मॉडलिंग के मूल तत्व हैं। 3डी मॉडलिंग में सतहों को एक साथ जोड़ा जाता है और ट्रांसलेशन, रोटेशन और स्केलिंग का उपयोग करके मूल आकृतियों लेकर जटिल वर्णों और वातावरण तक किसी भी संख्या में ऑब्जेक्ट बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।

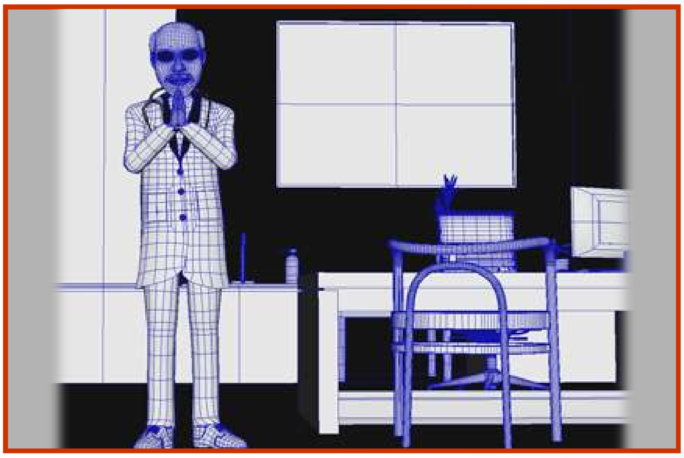

· यूवी मैपिंग

यूवी मैपिंग एक मौजूदा 3डी मॉडल का 2डी मैप में अनुवाद करने की कला है। यह 2डी नक्शा एक नए समन्वय प्रणाली के भीतर मौजूद है जिसे यूवी बनावट स्थान (UV texture space) कहा जाता है। U और V उस स्थान में दो धुरियों को प्रकट करते हैं। यह प्रक्रिया एक डब्बे के किनारों को खोलने के समान है। अच्छी यूवी मैपिंग तकनीकों का उपयोग करने से टेक्सचरिंग चरण के दौरान आमतौर पर पाई जाने वाली बहुत सारी समस्याओं को कम करने में मदद मिल सकती है, जैसे कि टेक्सचर का मुड़ना, टेक्सचर का खिचना, असंगत पिक्सेल घनत्व और सीम का गलत स्थान पर होना।

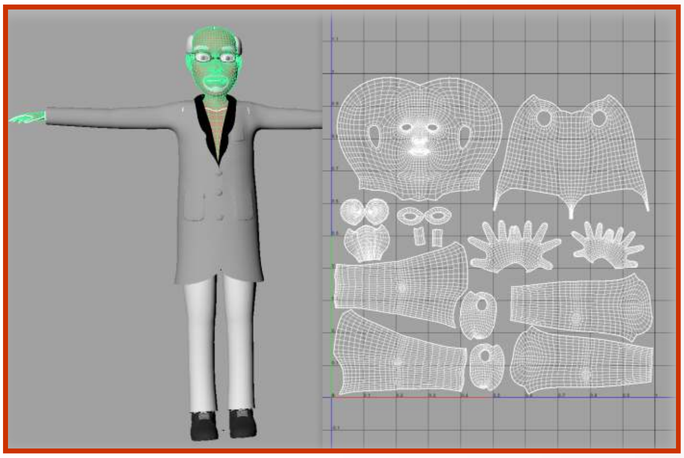

· टेक्स्चरिंग और शेडर्स

टेक्सचरिंग और शेडर्स पाइपलाइन में वह चरण है जहां 3डी मॉडल को उनके परिभाषित कला के आधार पर उनका रूप-रंग दिया जाता है। शेडर्स कई गुणों के एक समूह में युक्त होते हैं जो एक सतह की प्रकृति/रूप-रंग निर्धारित करती है और वह प्रकाश के साथ कैसे परस्पर प्रभाव करता है। इन गुणों में सतह का रंग, स्पेक्युलरिटी, पारभासी, परावर्तन या प्रसार भी शामिल हो सकते हैं। 2डी चित्रों का उपयोग कभी- कभी यह परिभाषित करने ले लिए किया जाता है कि किसी दी गई सतह पर ये गुण कैसे बदलते हैं। इन चित्रों के निर्माण और अनुप्रयोग को टेक्सचरिंग या टेक्सचर मैपिंग के रूप में जाना जाता है।

· रिगिंग

किसी भी 3डी मॉडल में एक कंकाल का निर्माण किया जाता है ताकि उसे एनीमेशन के लिए तैयार किया जा सके, इस प्रक्रिया को रिगिंग कहा जाता हैं।

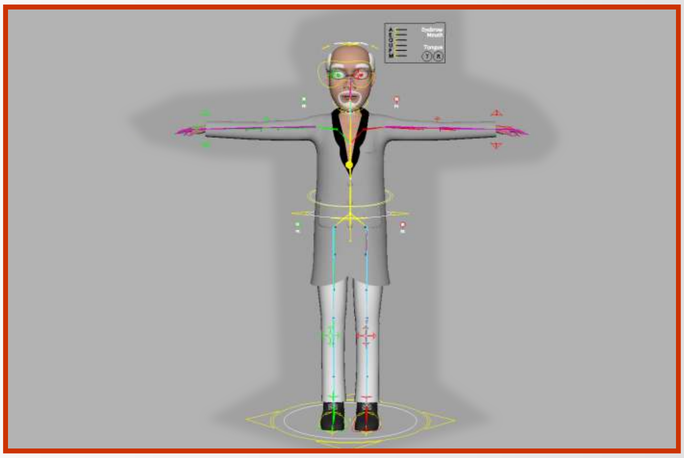

इसमें न केवल कंकाल का निर्माण शामिल है, बल्कि नियंत्रक(controls) का भी निर्माण किया जाता है जो इस कंकाल को मॉडल के अनुमत संचालन को परिभाषित करते हैं। नियंत्रकों का उपयोग करके मॉडल को परोक्ष रूप से नियंत्रित किया जा सकता है।

· एनीमेशन

3डी प्रोडक्शन पाइपलाइन में एनीमेशन की परिक्रिया में मौजूदा 3डी मॉडल्स को लेना और एनीमेशन की माध्यम से जीवन में लाना है। 3डी में एनीमेशन आमतौर पर किसी न किसी प्रकार के रिग्ग्ड किरदार(Rigged Character) से जुड़ा होता है, लेकिन एनीमेशन में 3डी दृश्य के भीतर अन्य ऑब्जेक्ट शामिल हो सकते हैं, जैसे कि कैमरा, लाइट इत्यादि।

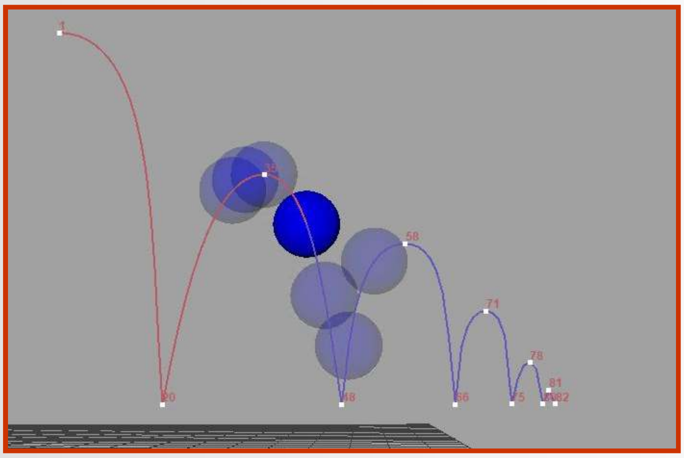

3डी सॉफ्टवेर के एनीमेशन में आम तौर पर एक टाइमलाइन के साथ कीफ्रेमिंग पोज शामिल होता है और समय के साथ इन पोज के बीच सुचारू रूप से बदलाव के तरीके में संचालन होता है।

3डी सॉफ्टवेर में एनीमेशन की प्रिक्रिया पारम्परिक ड्रा-एनीमेशन में पाए जाने वाले प्रिक्रिया से भिन्न नहीं है। प्राथमिक अंतर यह है कि सॉफ्टवेर, एनिमेटर द्वारा मैन्युअल रूप से भरने की आवश्यकता के बजाय बीच के फ्रेम की गणना करता है। इन बीच के फ्रेम को कर्व्स या ग्राफ के माध्यम से संचालित किया जाता है ।

· प्रकाश (Lighting)

3डी प्रोडक्शन पाइपलाइन के इस चरण में 3डी दृश्य में रोशनी जोड़ना शामिल है। प्रकाश का उपयोग यह निर्धारित करता है, कि एक दृश्य, एक दर्शक को कैसे समझ आता है। प्रकाश किसी दृश्य या वातावरण के मूड और टोन को सेट करने में सहायक होता है।

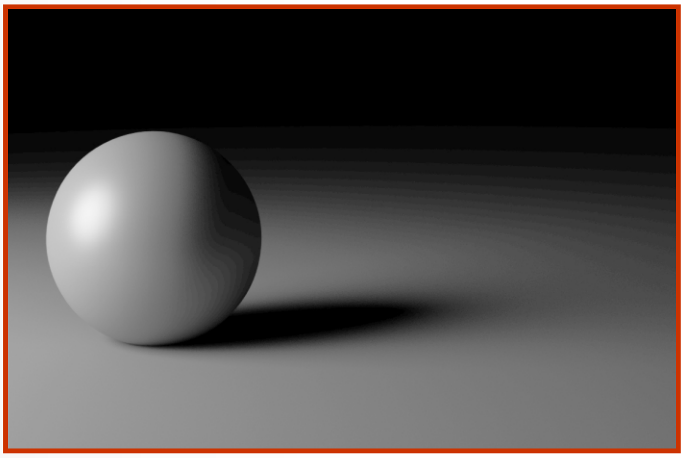

· प्रतिपादन (Rendering)

3डी प्रोडक्शन पाइपलाइन में प्रतिपादन की प्रक्रिया, एक दृश्य (वस्तुओं, सामग्री, रोशनी, कैमरे) के भीतर रखी गई सभी सूचनाओं का संयोजन है जो अंतिम रूप से प्रदान की गई छवियों के एकल या अनुक्रम का उत्पादन (Render) करती है। यह आम तौर पर उत्पादन प्रक्रिया का एक कम्प्यूटेशनल रूप से गहन हिस्सा है। दृश्य की जटिलता, वांछित गुणवत्ता के स्तर और इसके इच्छित प्लेटफॉर्म के आधार पर, प्रदान की गई छवियों का उत्पादन करने के लिए विभाजित सेकंड से लेकर घंटों तक कहीं भी ले सकता है।

पोस्ट-प्रोडक्शन

इस स्तर पर, पिछली प्रक्रिया में हुए उत्पादन (Render) को संलग्न करके अंतिम रूप देने की प्रक्रिया होती है। इसे पेशेवर दिखने के लिए परियोजना में अंतिम स्पर्श जोड़े जाते हैं । यह चरण पाइपलाइन में अंतिम चरण होता है।

पोस्ट-प्रोडक्शन चरण में निम्नलिखित प्रक्रियाएं होती हैं-

· **इफेक्ट्स**(Effects)
कुछ दृश्य प्रभाव जैसे, चिंगारी, धूल, तूफान, बारिश की बूंदें, कैमरा हिलाना, आदि इफेक्ट्स हैं। जो प्रोडक्शन में हुए रेंडर के अनुमत बनाये जाते हैं। इसका उदाहरण जैसे धमाके के अनुसार कैमरा को हिलाना और आग को दृश्य के वातवरण अनुसार बनाना। यह प्रभाव आमतौर पर कंपोजिटिंग में कई अन्य परतों के साथ मिश्रित होते हैं।

· **संयोजन**(Compositing)
इस चरण में, पिछले चरण से रेंडर इमेज लेना या उन्हें ट्विक करना या अतिरिक्त इमेज लेयर्स के साथ सयोंजन करना शामिल है, ताकि अधिक जटिल, संयोगशील कंपोजिशन बनाया जा सके। कंपोजिटिंग की प्रमुख अवधारणाओं में शामिल हैं - मैट, रोटोस्कोपिंग, कीइंग, ब्लेंडिंग-मोड और ट्रैकिंग।

· **एडिटिंग**(Editing)
एडिटिंग एक वीडियो को प्रेजेंटेशन या आउटपुट के लिए एक साथ रखने, गैर-जरूरी रेंडर को हटाकर साफ करने और अंतिम रूप देने की प्रक्रिया है। इसका उपयोग ज्यादातर पोस्ट-प्रोडक्शन कार्य का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो कि सभी शॉट्स और फुटेज लेने के बाद किया गया काम है। सभी शॉट्स और फुटेज को अंतिम आउटपुट के लिए तैयार किया जाता हैं।

अंतिम आउटपुट

पाइपलाइन के आउटपुट स्वरूप के संबंध में अलग-अलग विकल्प हैं, हालांकि, सबसे आम प्रकार एक डिजिटल वीडियो है जो अधिकांश डिजिटल उपकरणों के साथ संगत है और इंटरनेट पर भी चलाया जा सकता है।

3डी एनीमेशन एक जटिल प्रक्रिया है। यह एक सामूहिक प्रयास है, जिसमें विभिन्न कौशल और जिम्मेदारियों वाले लोगों का समूह है। प्रक्रिया को कुशलतापूर्वक और सफल बनाने के लिए, एक ठोस प्रोडक्शन पाइपलाइन की आवश्यकता होती है। प्रत्येक स्टूडियो की प्रोडक्शन पाइपलाइन भिन्न-भिन्न हो सकती है। प्रोडक्शन पाइपलाइन का हमेशा पालन करना चाहिए। प्रोडक्शन पाइपलाइन का पालन नहीं करने पर, समय की लागत और रूपए का खर्च बढ़ जाता है और एक ही पात्र के एनीमेशन में भिन्नता आ सकती है। एनीमेशन उत्पादन एक बहुत ही समन्वित प्रक्रिया है जहां कलाकारों की विभिन्न टीमें इष्टतम संसाधनों का उपयोग करते हुए और उपलब्ध समय में प्रारंभिक लक्ष्य को प्राप्त करते हुए एक साथ काम करती हैं।

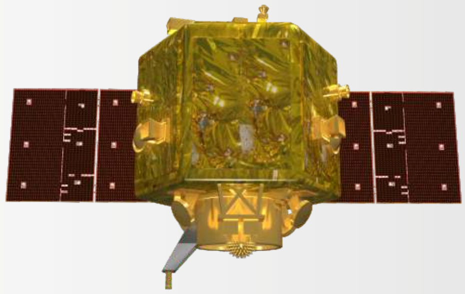

हिमाँशु चौरसिया
वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)
अरूप सिंह
वैज्ञानिक सहायक ए (मल्टीमीडिया)

जूनागढ़ शहर :

जूनागढ़ ऐतिहासिक एवं धार्मिक संरचनाओं से सुसज्ज, गिरनार पहाड़ियों के तल पर स्थित एक सुंदर शहर है। इसके नाम का अर्थ "पुराना किला" होता है । यह कभी भारत की बड़ी नवाबी रियासत रह चुका है।

जूनागढ़ शहर का इतिहास पर्यटकों को यहां आने के लिए सिर्फ आकर्षित ही नहीं करता बल्कि उत्साहित भी करता है। यहां की प्राचीन शैली की वास्तुकला, स्मारक एवं गुफाएं तथा प्रकृति इस स्थल को अद्भुत और नयनरम्य बनाती है। इस लेख में यह पुराना शहर पर्यटन के लिए कितना खास है यह आपसे साझा करूँगा।

जूनागढ़ शहर में घूमने लायक जगहें

गिरनार पर्वत

शहर की सीमाचिन्ह रूप जगह यानी गिरनार पर्वत। आप अपने सफर की रोचक शुरुआत इस खूबसूरत पर्वतमाला से कर सकते हैं। ये पर्वत जूनागढ़ शहर से करीब 5 किमी दूर है। गिरनार, जूनागढ़ की एक प्राचीन और पवित्र पहाड़ी है, जो लगभग 3670 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। इसके सबसे ऊँचे और अंतिम शिखर तक पहुँचने के लिए लगभग 10000 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं जो गिरनार तलेटी से शुरू होती है। गिरनार पर्वत में कुल 4 ऊँचे शिखर हैं। पहला शिखर है जैन मंदिर (लगभग 4000 सीढ़ियाँ), दूसरा शिखर है माँ अम्बाजी मंदिर (लगभग 5000 सीढ़ियाँ), तीसरा शिखर है गोरखनाथ मंदिर (लगभग 5800 सीढ़ियाँ) और चौथा शिखर है गुरु दत्तात्रेय पादुका लगभग 3660 फुट (लगभग 10000 सीढ़ियाँ)।

गिरनार पर्वत की सबसे सुहानी और आनंदित करनेवाली सैर सुबह की होती है जो एक अलग ही अनुभव कराती है। गिरनार पर्वत की तलेटी में हर कार्तिक पूर्णिमा के समय नवंबर-दिसंबर महीने में भव्य मेले का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें शामिल होने के लिए देश भर से नागा साधुऔर भक्त यहां आते हैं। अब प्रश्न यह है कि पर्वत की चढ़ाई कठिन तो नहीं है क्यूंकि लगभग 10000 सीढ़ियाँ चढ़ना और उतरना मुश्किल है। इसके तीन मुख्य तरीके है, पहला पैदल सीढ़ियाँ चढ़ कर, दूसरा पालकी सेवा का उपयोग करके और तीसरा सबसे अद्भुत तरीका है रोप वे सुविधा। एशिया की सबसे बड़ी और ऊँची रोप वे सुविधा!!

मेरे अनुभव से एक बात तो मैं जान गया कि अगर आप पैदल सीढ़ियाँ चढ़के जाना चाहते हैं तो एक आसान तरीके के बारे

में बताता हूँ। जिससे आप को थकावट भी कम होगी और आप पर्वत की सबसे ऊँची चोटी तक पहुँच कर वापिस आ जाएंगे कम समय में।

जिस दिन आपको दर्शन करने है उसके अगले दिन आप जूनागढ़ आ जाइए। फिर दूसरे दिन सुबह आप रोप-वे की टिकिट ले कर माँ अम्बाजी के मंदिर तक पहुँच जाइये। माताजी के दर्शन कर लीजिए उसके बाद आप वहाँ से एक लकड़ी ले लीजिये जिसका शुल्क 30 रुपये होता है। इसे आप गिरनार चढ़ कर वापिस भी कर सकते हो।

लकड़ी लेना जरूरी नहीं है पर सहूलियत और कम थकान के लिए आवश्यक है क्यूंकि वह आपके लिए तीसरे पैर का काम करेगी। इसके साथ साथ आप नींबू शरबत या कोई शरबत रखे तो प्यास बुझाने के लिए अच्छा रहेगा। आप पानी भी रख सकते है पर उसे घूंट घूंट करके पिते रहें ना कि ग्लास भर के। जब आप गुरु दत्तात्रेय पादुका मंदिर पर पहुंचेंगे तो एक अलग ही जोश का अनुभव करेंगे और वहाँ आती हुई शुद्ध ताज़ी हवा में एक अनोखी ताजगी का अनुभव करेंगे जो चुटकी में आपकी सारी थकन मिटा देगा।

उपरकोट किला

उपरकोट किला जूनागढ़ में घूमने लायक ऐतिहासिक स्थान में से एक है। इस किले में प्राचीन स्मारक जैसे अड़ी कड़ी वाव, नवघन कुआ, नीलम और मानेक नाम के तोप, जामा मस्जिद, बौद्ध गुफाएं जैसे आकर्षण आये हुए है। यह किला लगभग 2,300 साल पुराना है। आपको इस किले की मुलाकात अवश्य लेनी चाहिए क्यूंकि ये प्राचीन कला और कारीगरी का अद्भुत नमूना है।

विलिंग्डन डेम

विलिंग्डन डेम (बांध) का निर्माण कालवा नदी पर हुआ है। इसे जूनागढ़ के लोगों के लिए पीने के पानी के संग्रह के लिए बनाया गया था। इसका नाम भारत के तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड विलिंगडन के नाम पर रखा गया था। विलिंग्डन डेम से आप दातार हिल जा सकते है।

रोप वे सुविधा की कुछ खास बातें..

25 ट्रॉली
हर घंटे करीब 800 श्रद्धालुओं की क्षमता
सिर्फ 7-8 मिनट्स में तलेटी से मंदिर तक
रोप वे टिकट: दोनों तरफ प्रति व्यक्ति : 700/-
बच्चे (16 वर्ष से कम आयु) 350/-
और एक तरफ के 400/-

अन्य घूमने लायक जगह:

1. उपरकोट किला
2. दामोदर कुंड
3. भवनाथ महादेव मंदिर
4. विलिंग्डन डेम
5. महोबत मकबरा
6. शक्करबाग प्राणी संग्रहालय
7. अशोक के शिलालेख
8. स्वामीनारायण मंदिर
9. नरसिंह मेहता चोरा
10. नरसिंह मेहता तालाब
11. अड़ी-कड़ी वाव
12. नवघन कुंवां

अशोक के शिलालेख

अशोक के शिलालेख जूनागढ़ से गिरनार पर जाते समय आता है। यह शिलालेख सम्राट अशोक के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमे 14 आज्ञाएँ पाली भाषा में लिखी हुई है, यह लगभग 2200 वर्षो से यहाँ है।

शक्करबाग प्राणी संग्रहालय

शक्करबाग प्राणी संग्रहालय जूनागढ़ का सबसे लोकप्रिय स्थान है। यह बच्चों के साथ घूमने लायक स्थान है। इसका मुख्य आकर्षण यहाँ का एशियाई शेर है। इसके साथ-साथ यहाँ पर तेंदुआ, हिरण, काला हिरन, जंगली सूअर, नीलगाय, पक्षी, मछलीघर भी है।

मोहब्बत मकबरा

यह जूनागढ़ शहर की सीमाचिह्न रूप जगह में से एक है। यह मकबरा 1 8 5 1 और 1 8 8 2 के बीच बनाया गया था। मोहब्बत मकबरा की संरचना में आपको यूरोपीयन और इंडो इस्लामिक शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है। इसके अलावा और भी सीमाचिन्ह रूप जगह है जिसका विवरण मैंने यहाँ दिया हुआ है। यह सारी जगह आप एक दिन में घूम सकते है क्यूंकि सभी एक-दूसरे के आस पास है। सही मायनों में यह एक अद्भुत और यादगार अनुभव रहेगा आपके लिए। यहाँ घूमने जाने का सबसे अच्छा समय सर्दियों की भीनी भीनी शुरुआत और नवंबर से लेकर मार्च माह तक का है।

जूनागढ़ कैसे पहुंचे?

पहेला: रोड द्वारा

अहमदाबाद से जूनागढ़ की दूरी करीब 310 किमी है। आप अपनी गाड़ी लेकर या राज्य सरकार परिवहन की बस, प्राइवेट वॉल्वो बस, टैक्सी या कैब की मदद से आसानी से जूनागढ़ पहुँच सकते हैं।

दूसरा: हवाई

सबसे नजदीकी हवाईअड्डा राजकोट है जो यहाँ से करीब 102 किमी दूर है। जो देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। जहाँ से आप रेल्वे, बस, या टैक्सी में जूनागढ़ पहुँच सकते हैं।

तीसरा: रेल्वे

आप रेल से भी जूनागढ़ आ सकते हैं। जूनागढ़ का स्टेशन राज्य एवं देश के कई बड़े शहरों से जुड़ा है। यहाँ कई एक्सप्रेस और लोकल ट्रेनें आती जाती रहती हैं और आप यहाँ से टैक्सी या ऑटो की मदद से घूम सकते हैं।

तो यह था मेरा जूनागढ़ के गिरनार पर्वत और शहर की जानी पहचानी इमारतों और जगह का सफर। उम्मीद करता हूँ कि आप एकबार तो अवश्य मुलाकात लेंगे इस शहर की।

स्वामीनारायण मंदिर

मोहब्बत मकबरा

मजेवाडि गेट

जनसारी जयरव अश्विनभाई
कनिष्ठ निर्माता

"मनुष्य को अपनी कठिनाइयों की आवश्यकता होती है क्योंकि वे सफलता का आनंद लेने के लिए आवश्यक हैं।"

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

"भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप आज क्या करते हैं।"

- महात्मा गांधी

"कोशिश करें कि सफल व्यक्ति न बनें, बल्कि मूल्यवान व्यक्ति बनने का प्रयास करें।"

-अल्बर्ट आइंस्टीन

"अपने आप को बेहतर बनाने में इतने व्यस्त रहें कि आपके पास दूसरों की आलोचना करने का समय न हो।"

- चेतन भगत

"देने वालों के पास सब कुछ है; जो रोकते हैं उनके पास कुछ भी नहीं है।"

- भारतीय कहावत

"हमारे पास जो कुछ है वह अस्थायी है, लेकिन हम जो बन जाते हैं वह स्थायी है।"

- देवदत्त पटनायक

"हर दिन का न्याय उस कटनी से न करो जो तुम काटते हो, परन्तु उस बीज से जो तुम बोते हो।"

- रॉबर्ट लुइस स्टीवेन्सन

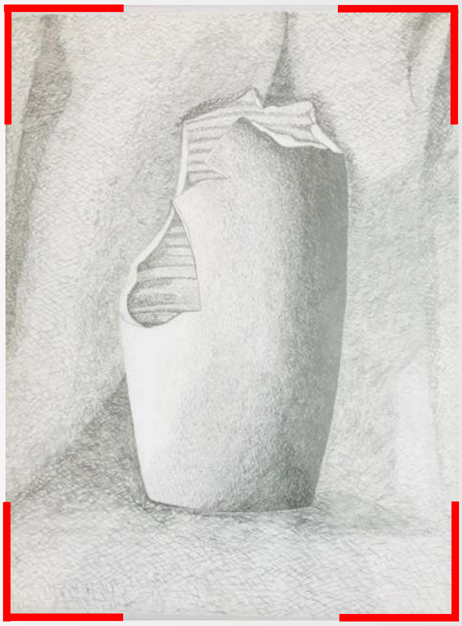

अंकिता पराची

वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

डेकू में वर्ष 2021 के दौरान राजभाषा गतिविधियाँ

उपलब्धि

23 फरवरी 2021 को नराकास, अहमदाबाद की 76वीं बैठक में वर्ष 2019-20 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु डेकू को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्री अमित जैन, अध्यक्ष, नराकास एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त-गुजरात, अहमदाबाद द्वारा निदेशक, डेकू को इस अवसर पर शील्ड प्रदान की गई एवं सहायक निदेशक-(रा.भा.)/सदस्य-सचिव, राभाकास, डेकू को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

विशेष कार्य:

डेकू द्वारा निम्नलिखित हिंदी वृत्तचित्रों का निर्माण हिंदी में किया गया:-

(1) पीएसएसएलवी-सी51/अमेजोनिया-1 मिशन

(2) निदेशक, सैक का विदाई भाषण

(3) गणतंत्र दिवस समारोह 2021

(4) स्वच्छ भारत मिशन समारोह 2021

(5) अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2021

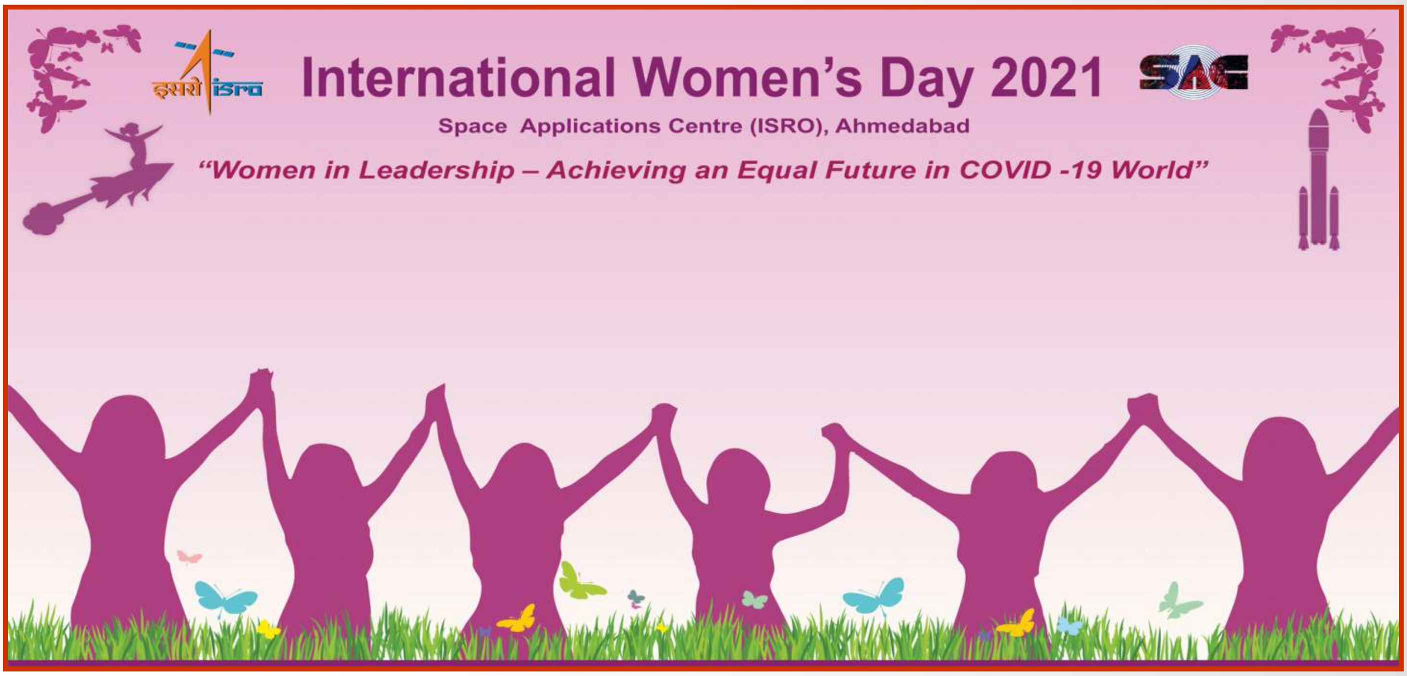

(6) कोविड वैक्सीन पोडियम

(7) दिशाएँ

(8) पानी की कहानी

(9) अग्निशमन सप्ताह 2021

10) स्पेस समाचार-2 अंक

(11) आज़ादी का अमृत महोत्सव: एकता दिवस एवं भारत के स्वतंत्रता सेनानी: बच्चों द्वारा निरूपण

(12) हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिता

(13) आज़ादी का अमृत महोत्सव: प्रभात फेरी

प्रभात फेरी (पदयात्रा)

साईकिल यात्रा

एकता दौड़

(14) दावानल: जंगल की आग और अंतरिक्ष की सहायता

डेकू द्वारा निम्नलिखित हिंदी वीडियो कार्यक्रमों का संपादन किया गयाः

(1)स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम

2) अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दौरान विविध कार्यक्रम (यूमैटर्स, मैशप गीत, शाबाशियाँ गीत, आत्मनिर्भर स्किट, रिश्ते स्किट, कठपुतली गरबा-इनोवेशन विद द प्राचीन लोक कथा

यूमैटर्स

आत्मनिर्भर स्किट

रिश्ते स्किट

कठपुतली गरबा-इनोवेशन विद द प्राचीन लोक कथा

"मन एक बिन पतवार की नाव,जैसा बहाव वैसा बर्ताव ।"

अरविंद कुमार मिश्र
वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

अरविंद कुमार मिश्र
वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

(3) महिला दिवस के दौरान मोनिका यादव और अदिति रावल का साक्षात्कार

(4) दिशाएँ- एक वृत्तचित्र

(5) भूकंप पर एक वीडियो कार्यक्रम

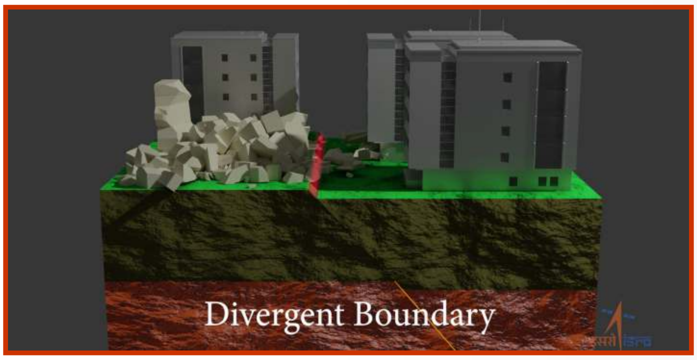

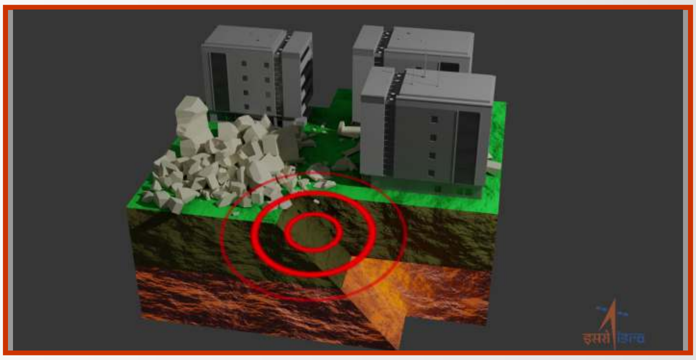

(6) दावानल-एक वृत्तचित्र

(7) पानी की कहानी- एक शुरुआत

(8) अल नीनो

<u>प्रकाशन :</u>

23 मार्च 2021 को निदेशक, डेकू द्वारा डेकू की हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका डेकू दर्पण के चतुर्थ अंक का विमोचन किया गया।

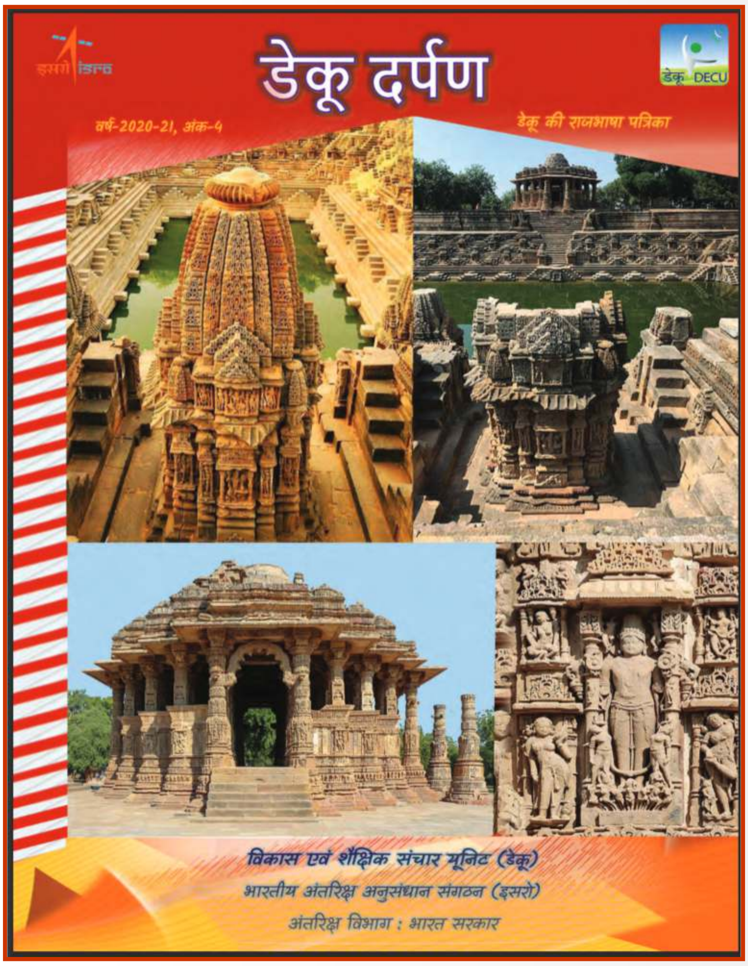

<u>अन्य गतिविधियाँ</u>

- निदेशक, डेकू की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 39वीं बैठक (23.03.2021), 40वीं बैठक (23.06.2021), 41वीं बैठक (15.09.2021) एवं 42वीं (15.12.2021) बैठक का आयोजन किया गया। इन बैठकों में संबंधित तिमाहियों के दौरान केंद्र में राजभाषा नीति के अनुपालन की समीक्षा की गई। केंद्र में प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

- विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 08 जनवरी को 'अपनी हिंदी परखें' प्रतियोगिता तथा 'हिंदी वर्ग पहेली' प्रतियोगिता का ऑनलाइन मोड में आयोजन किया गया, डेकू स्टाफ सदस्यों ने उत्साह से भाग लिया।

- वर्ष 2021-22 के दौरान अधिकतर कार्यालीयन काम हिंदी में करने हेतु लागू प्रोत्साहन योजना (सोलिस) लागू की गई।

- डेकू द्वारा सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगिताओं काव्यपाठ, एकांकी, प्रश्नमंच (मौखिक) एवं पुरस्कार वितरण समारोह का सैकनेट के माध्यम से लाइव प्रसारण किया गया और सभी कार्यक्रमों की वीडियो रिकॉर्डिंग की गई।

- डेकू द्वारा विभिन्न समितियों का गठन : (1) राजभाषा मित्र दल समिति का गठन : यह मित्र दल डेकू में राजभाषा गतिविधियों के समन्वयन में योगदान करेगा। (2) डेकू न्यूज लेटर एवं प्रकाशन समिति (डीएनपीसी) गठन: यह

समिति डेकू की राजभाषा पत्रिका डेकू दर्पण का कार्य भी देखेगी। (3) कार्यक्रम पटकथा निर्माण टीम (टीएसजीटी) एवं वीडियो कार्यक्रम मूल्यांकन समिति (वीपीईसी) का गठन: ये समितियाँ क्रमश: हिंदी पटकथा और हिंदी वीडियो कार्यक्रमों में अपना परामर्श प्रदान करेगी।

- वर्ष के दौरान 10.02.2021, 02.06.2021, 28.07.2021 तथा 27.10.2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संघ की राजभाषा नीति, नियम, कार्यान्वयन तथा कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने संबंधी विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया। 26 नवंबर 2021 को प्रभाग प्रधान वर्ग के अधिकारियों के लिए विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें उन्हें तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने तथा शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में करने हेतु लागू आंतरिक राजभाषा निरीक्षण के संबंध में जानकारी प्रदान की गई।

- राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह समारोह 2021 के उपलक्ष्य में हिंदी निबंध प्रतियोगिता एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, डेकू कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में सहभागिता की।

- 01 से 30 सितंबर 2021 तक हिंदी माह के अवसर पर कर्मचारियों के लिए 09 प्रतियोगिताओं एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए भी 05 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताएँ 'क', 'ख', और 'ग' भाषा वर्ग के कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई। कोविड-19 परिस्थितियों का ध्यान में रखते हुए अधिकांश प्रतियोगिताओं का आयोजन ऑनलाइन/वर्चुअल माध्यम से किया गया।

- हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना लागू की गई।
- 14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कर्मचारियों द्वारा राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई और माननीय गृहमंत्री का हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में जारी संदेश परिचालित किया गया।

- सर्तकता जागरूकता सप्ताह 2021 के अवसर पर कर्मचारियों ने हिंदी में शपथ ली। सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 के उपलक्ष्य में ऑनलाइन निबंध तथा ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डेकू के कर्मिकों ने उक्त प्रतियोगिता में भाग लिया।

- संविधान दिवस के अवसर पर कर्मचारियों ने भारत के संविधान की उद्देशिका हिंदी में पढ़ी।

- कक्षा 1 से 12 विद्यार्थियों को हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए योग्यता पुरस्कार प्रदान किए गए।

- आज़ादी अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में भाषण, निबंध, स्लोगन, देश भक्ति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डेकू के स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की।

- दिनांक 01 अप्रैल, 2021 को हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने संबंधी पत्र जारी किया गया।

- डेकू की मासिक रिपोर्ट एवं बजट संबंधी दस्तावेजों में हिंदी का प्रयोग किया गया।

- दूर शिक्षा एवं दूर चिकित्सा संबंधी नेटवर्क तथा केंद्रों से संबंधित अधिकारियों/नोडल एजेंसियों तथा विभिन्न नोड्स के साथ हुए संचार/परामर्श में हिंदी का प्रयोग किया गया।

- निदेशक, डेकू के मार्गदर्शन में समिति द्वारा विडियो कार्यक्रमों की स्क्रिट हिंदी में तैयार की गई। स्पेस, शिक्षा और संचार (एस3) के तहत बनाए गए वीडियो कार्यक्रम में हिंदी का प्रयोग किया गया।

- उत्तराखंड दूर शिक्षा-नेटवर्क की प्रतिपुष्टि एवं विषयवस्तु आवश्यकता का अध्ययन विज्ञान स्नातक विद्यार्थियों के विशेष संदर्भ में संबंधित विद्यार्थी साक्षात्कार अनुसूची हिंदी में तैयार की गई।

- "उपग्रह संचार के द्वारा अंडमान और निकोबार द्वीप के स्वास्थ्य क्षेत्र का सुदृढ़ीकरण" रिपोर्ट का प्रथम पृष्ठ व कंट्रोल शीट हिंदी में तैयार की गई।

- आईआईआरएस ऑनलाइन लर्निंग आउटरीच कार्यक्रम इम्पेक्ट रिपोर्ट हिंदी में तैयार की गई।

- नई आकाश वेबसाइट की टाइटल स्लाइड, आकाश वेबसाइट फ्लैश स्लाइड, स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम बैनर, महिला दिवस समारोह का बैनर हिंदी में डिजाइन किए गए।

- मोस्डेक वेबपोर्टल से संबंधित रिपोर्ट का प्रथम पृष्ठ एवं कंट्रोल शीट हिंदी में तैयार की गई।

- डेकू द्वारा ''अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आधारित सामाजिक अनुप्रयोगों की यात्रा'' शीर्षक पर हिंदी पुस्तक का लेखन एवं संपादन कार्य किया जा रहा है।

- सतत् चिकित्सा कार्यक्रम, दूर चिकित्सा, दूर शिक्षा आदि से संबंधित उपयोगकर्ताओं से होने वाले पत्राचार द्विभाषी में तैयार किए गए।

- निदेशक डेकू के निर्देशानुसार सीएमई आदि से संबंधित पत्राचार के प्रारूपों के द्विभाषी मसौदे तैयार किए गए और प्रेषित किए गए।

कला प्रदर्शनी

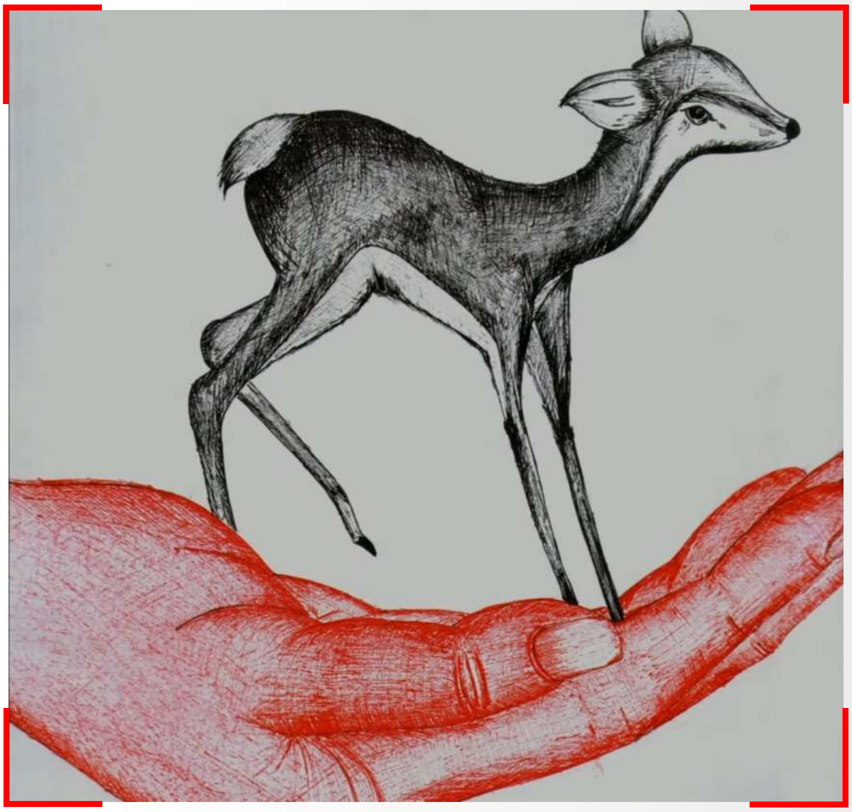

अरविंद कुमार मिश्र
वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

खादी प्रदर्शनी में आउटडोर शूटिंग

नराकास की बैठक

डेकू स्टूडियो से सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम

सैक में डॉ.पवन गोयन्का, अध्यक्ष पदस्थ, इन्स्पेस तथा
सुश्री संध्या वेणुगोपाल शर्मा, संयुक्त सचिव(का), अंवि

डेकू के हिंदी में कार्यालयीन कार्यों का निरीक्षण श्रीमती गीता,
वरिष्ठ प्रधान, का एवं सा.प्रशा., एचएसएफसी, बेंगलूरू द्वारा

हिंदी दिवस के अवसर पर डेकू के कर्मचारियों ने शपथ ग्रहण की

डेकू में रंगोली

डेकू स्टूडियो में रिकार्डिंग

आज़ादी का अमृत महोत्सव
कार्यक्रम- श्री बी एस भाटिया द्वारा व्याख्यान

सैक में 130बीं डॉ. बी आर अम्बेडकर
जयंती समारोह

इसरो isro
अंतरिक्ष विभागः भारत सरकार
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
SAC
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र / विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट
अहमदाबाद
डेकू DECU
हिन्दी माह 2021
पुरस्कार वितरण
एवं
सांस्कृतिक कार्यक्रम
गुरूवार 30 सितंबर 2021
आप सभी का हार्दिक स्वागत है

अनंत सुवर्णकार
चिराग दीवान
नीलू सेठ
सोनू जैन
और
धवल वर्तक
: सहायक :

"कोविड-19 वैश्विक महामारी लॉकडाउन के दौरान केवी-सैक छात्रों के बीच ऑनलाइन कक्षाओं के बारे में विचार एवं बाधाएं" अध्ययन हेतु डेटा संग्रहण

सैन्य अस्पताल, डलहौजी में डेकू टीम के साथ निदेशक डेकू चर्चा करते हुए

विजन मिक्सर के लिए इनपुट के रूप में आउटडोर एचडी केमकोर्डर का परीक्षण

दूर चिकित्सा नोड परीक्षण

निदेशक डेकू एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा श्रम दान

कोविड-19 बुनियादी पूर्वोपाय पर डेकू वीडियो कार्यक्रम

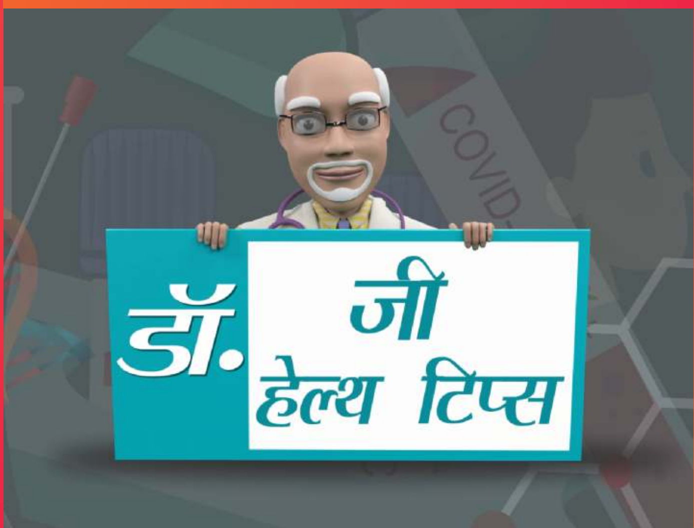

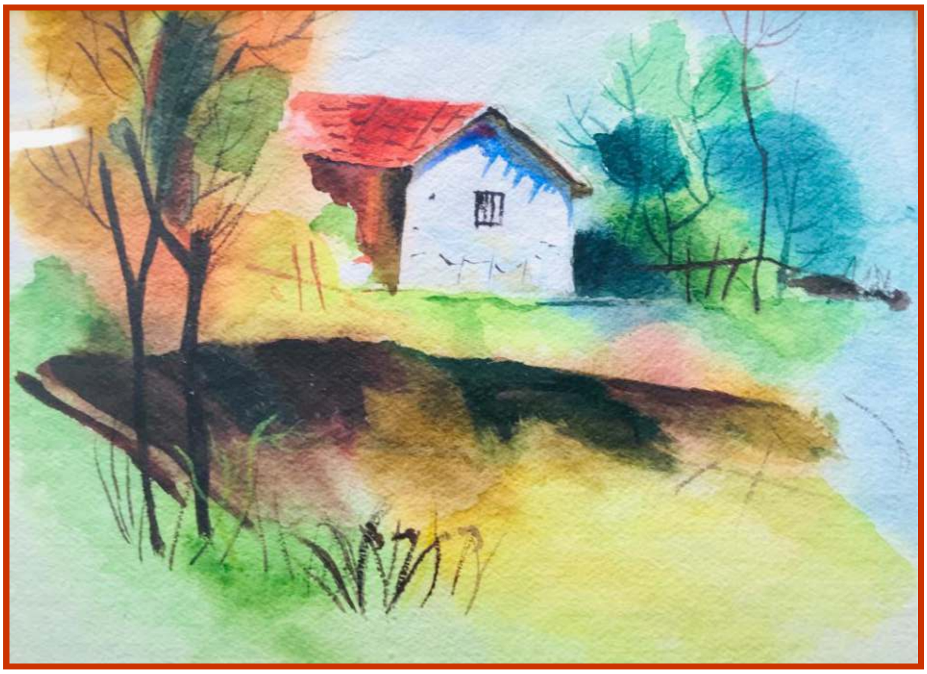

"घर तो घर है"

अंकिता पराची
वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

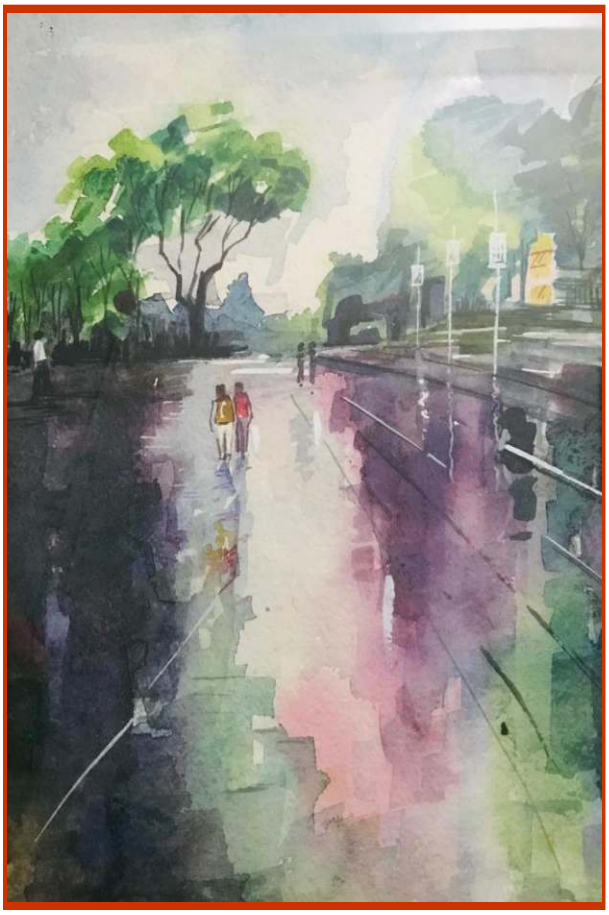

"दोस्ती की राह"

अंकिता पराची
वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

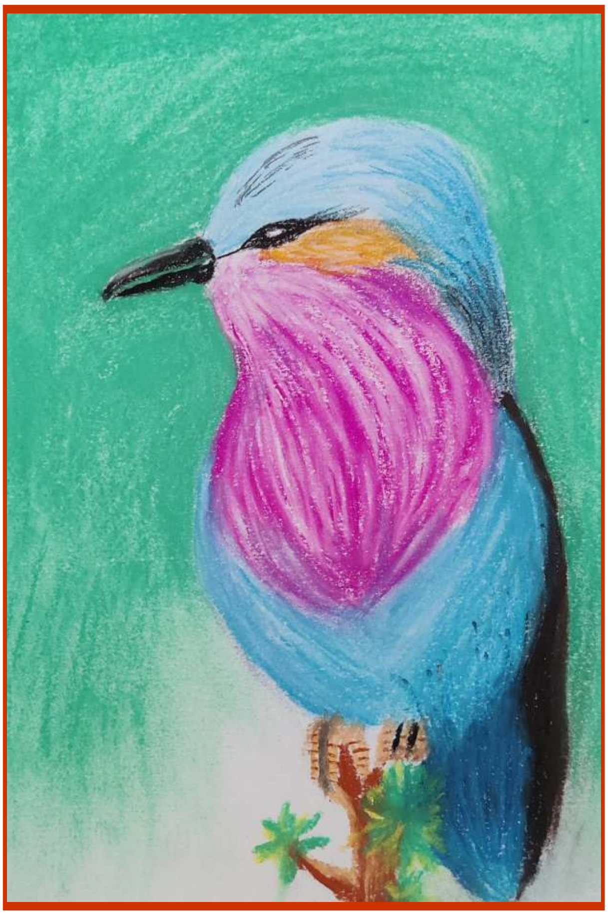

"एकांत का सौन्दर्य"

अंकिता पराची
वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

श्री वीरेन्द्र कुमार के कर-कमलों से डेकू में नवीन कक्षों का उद्घाटन

श्री वीरेन्द्र कुमार पूर्व निदेशक-डेकू का विदाई समारोह

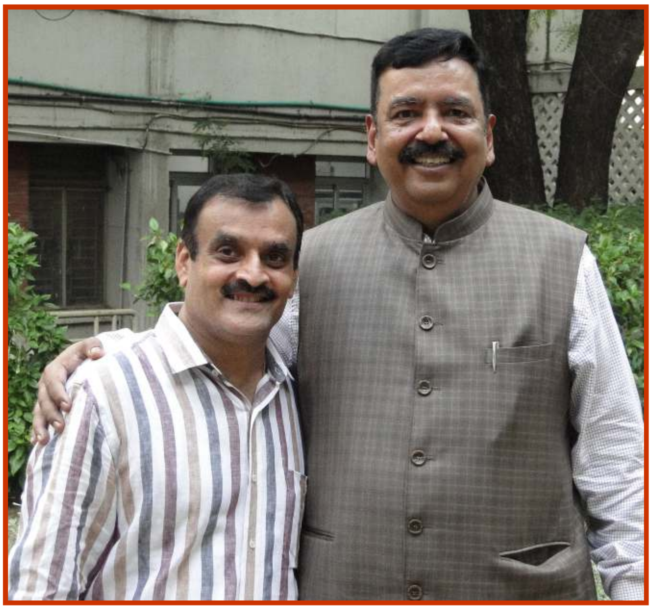

अरविंद कुमार मिश्र वैज्ञानिक सहायक बी (मल्टीमीडिया)

हर सुबह सूरज की लालिमा के साथ आऊँ , संध्या की लालिमा के साथ मैं उड़ जाऊँ ,
बंधन में जो मुझे रखे ओ काहेका मेरा प्रेमी रे , मैं मुक्त पंक्षी कहीं दूर मेरा बसेरा रे ।

इसरो isro

विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेकू)
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अहमदाबाद

डेकू DECU